Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063

Impact Factor : 3.4052(UIF)
Volume - 5 | Issue - 3 | Sept - 2015

भारत में स्त्री साक्षरता एवं लिंगानुपात

अमित सचान
असि. प्रोफेसर, भूगोल विभाग,
पं.सुन्दरलाल मेमोरियल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कन्नौज (उ.प्र.)

प्रस्तावना

किसी देश में स्त्री साक्षरता का स्तर उस देश के सर्वांगीण विकास में महती भूमिका निभाता है। स्त्री की शिक्षा का प्रभाव परिवार से प्रारम्भ होकर समाज और देश तक जाता है। साक्षर स्त्री सफलतापूर्वक अपने अधिकारों का प्राप्त करके समाज में व्याप्त लैंगिक असमानता के अन्तर को कम कर सकती है। विगत कुछ वर्षों में बढ़ती स्त्री साक्षरता के कारण ही महिला अधिकारों से सम्बन्धित विभिन्न मुद्दे राष्ट्रीय चिन्तन फलक में केन्द्रीय स्थान पाये हैं। इसके बावजूद स्त्री भ्रूण हत्या, स्त्री शिशु हत्या जैसी कुप्रथायें भारतीय समाज में अभी भी व्याप्त हैं। जिसके कारण भारत के लिंगानुपात में पुरूष प्रधानता परिलक्षित होती है। इन कुरीतियों के अलावा पुरूष शिशु की बढ़ती उत्तरजीविता अनुपात, जो कि बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के विभेदकारी उपयोग के कारण हैं,

भी लिंगानुपात को असंतुलित कर रहा है (जे0पी0 सिंह, 2010)। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (N.F.H.S.) 1992–93 के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि स्त्री साक्षरता में वृद्धि के साथ ही समाज में पुत्र प्राथमिकता जैसी प्रवृत्ति कम होती जाती है। डी0 जयराज एवं एस0 सुब्रह्मण्यम के अध्ययन में यह स्पष्ट है कि लिंगानुपात में सकारात्मक परिवर्तन देश के सामाजिक–आर्थिक विकास का एक अच्छा संकेतक ही नहीं वरन विश्वसनीय निर्देशक भी है। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन में कुछ भारतीय राज्यों के सन्दर्भ में परिवर्तित होता लिंगानुपात एवं स्त्री साक्षरता के बीच सम्बन्ध को समझने का प्रयास किया गया है।

लिंगानुपात एवं स्त्री साक्षरता के बीच सम्बन्धों के विश्लेषण हेतु भारतीय जनगणना 1981, 1991, 2001, 2011 के आंकड़ों का उपयोग किया गया है। यद्यपि वर्ष 2000 में तीन नये छोटे राज्यों का सृजन हुआ जो कि तीन बड़े एवं बृहद जनसंख्या वाले राज्यों को विभाजित करके बनाये गये। यह विभाजन आंकड़ों के विश्लेषण को कुछ न कुछ प्रभावित जरूर करेगा किन्तु अध्ययन में आंकड़ों का समूहन करके आने वाली विसंगति को समाप्त करने का प्रयास किया गया है।

सारणी क्रमांक 1 में जनगणना 1981 से जनगणन वर्ष 2011 तक 4 दशकों का लिंगानुपात विभिन्न राज्यों के लिए दिया गया है। भारत का लिंगानुपात 1981 से 2011 के मध्य 934 से बढ़कर 943 हो गया । 1981 में केरल का लिंगानुपात 1032 के साथ सबसे अधिक था, वहीं दिल्ली राज्य का लिंगानुपात निम्नतम 808 था जोकि 2011 की जनगणना में बढ़कर क्रमशः 1084 और 868 हो गया। 1981 की जनगणना में 15 राज्यों ने लिंगानुपात में गिरावट प्रदर्शित की, जबकि 2001 में गिरावट प्रदर्शित करने वाले 8 राज्य थे एवं 2011 में 02 राज्य थे। 2011 में बिहार और गुजरात के लिंगानुपात में गिरावट दिखायी दी।

सारणी क्रमांक – 1 भारतीय राज्यों में लिंगानुपात 1981–2011

राज्य	लिंगानुपात				लिंगानुपात में परिवर्तन		
	1981	**1991**	**2001**	**2011**	**1981-91**	**1991-01**	**2001-11**
आन्ध्र प्रदेश	975	972	978	993	-3.0	6	15
अरूणाचल प्रदेश	862	859	901	938	-3.0	42	37
बिहार	948	907	921	918	-41.0	14	-3
दिल्ली	808	827	821	868	19.0	-6	47
गोवा	975	967	960	973	-8.0	-7	13
गुजरात	942	934	921	919	-8.0	-13	-2
हरियाणा	870	865	861	879	-5.0	-4	18
हिमाचल प्रदेश	973	976	970	972	3.0	-6	2
कर्नाटक	963	960	964	973	-3.0	4	9
केरल	1032	1036	1058	1084	4.0	22	26
मध्य प्रदेश	921	912	920	931	-9.0	8	11
महाराष्ट्र	937	934	922	929	-3.0	-12	7
मणिपुर	971	958	978	992	-13.0	20	14
मेघालय	954	955	975	989	1.0	20	14
मिजोरम	919	921	938	976	2.0	17	38
नागालैण्ड	863	886	909	931	23.0	23	22
ओडिशा	981	971	972	979	-10.0	1	7
पंजाब	879	882	874	895	3.0	-8	21
राजस्थान	919	910	922	928	-9.0	12	6
सिक्किम	835	878	875	890	43.0	-3	15
तमिलनाडु	977	974	986	996	-3.0	12	10
त्रिपुरा	964	945	950	960	-1.0	5	10
उत्तर प्रदेश	882	876	898	912	-6.0	22	14
पश्चिम बंगाल	911	917	934	950	6.0	17	16
भारत	**934**	**927**	**933**	**943**	**-7.0**	**6**	**10**

सारणी क्रमांक 2 में पिछली 4 जनगणना वर्षों में स्त्री साक्षरता का प्रतिशत दिया गया है। जनगणना वर्ष 1981 से 2011 के मध्य स्त्री साक्षरता 29.8 प्रतिशत से बढ़कर 65.4 प्रतिशत हो गयी। 1981 में अरूणाचल प्रदेश और राजस्थान की स्त्री साक्षरता दर पुनः निम्नतम 52.6 प्रतिशत अंकित की गयी। केरल राज्य की स्त्री साक्षरता सबसे बेहतर 1981 में 75.6 प्रतिशत एवं 2011 में 91.9 प्रतिशत थी।

सारणी क्रमांक – 2 भारतीय राज्यों में स्त्री साक्षरता 1981–2011

राज्य	स्त्री साक्षरता दर (%)				साक्षरता परिवर्तन %		
	1981	1991	2001	2011	1981-91	1991-2001	2001-11
आन्ध्र प्रदेश	24.1	32.7	50.4	59.7	8.6	17.7	9.3
अरूणाचल प्रदेश	14	29.7	43.5	59.5	15.7	13.8	16
बिहार	16.5	22.9	33.1	53.3	6.4	10.2	20.2
दिल्ली	62.6	67	74.7	80.9	4.4	7.7	6.2
गोवा	55.1	67.1	75.4	81.8	12	8.3	6.4
गुजरात	38.4	48.6	57.8	70.7	10.2	9.2	12.9
हरियाणा	26.9	40.5	55.7	66.7	13.6	15.2	11
हिमाचल प्रदेश	37.7	52.1	67.4	76	14.4	15.3	8.6
कर्नाटक	33.1	44.3	56.9	68.1	11.12	12.6	11.2
केरल	75.6	86.2	87.7	91.9	10.6	1.5	4.2
मध्य प्रदेश	19	28.8	50.3	60	9.8	21.5	9.7
महाराष्ट्र	41	52.3	67	75.4	11.3	14.7	8.4
मणिपुर	34.6	47.6	60.1	73.1	12.9	12.5	13
मेघालय	37.2	44.8	59.6	73.7	7.6	14.8	14.1
मिजोरम	68.6	78.6	86.7	89	10	8.1	2.3
नागालैण्ड	40.4	54.7	61.5	76	14.3	6.8	15.1
ओडिशा	25.1	34.7	50.5	64.3	9.6	15.8	13.8
पंजाब	39.7	50.4	63.4	71.3	10.7	13	7.9
राजस्थान	14	22.4	43.9	52.6	6.4	23.5	8.7
सिक्किम	27.4	46.7	60.4	76.4	19.3	13.7	16
तमिलनाडु	40.4	51.3	64.4	73.8	10.9	13.1	9.4
त्रिपुरा	38	49.6	64.9	83.1	11.6	15.3	18.2
उत्तर प्रदेश	17.2	25.3	42.2	59.2	8.1	16.9	17
पश्चिम बंगाल	36	46.5	59.6	71.1	10.5	13	11.5
भारत	**77**	**74**	**54**	**47**	**3**	**20**	**7**

सारणी क्रमांक 3 में स्त्री साक्षरता में इकाई प्रतिशत वृद्धि के साथ लिंगानुपात में होने वाले परिवर्तन को दर्शाया गया है। दिल्ली के लिंगानुपात में परिवर्तन प्रति इकाई परिवर्तित साक्षरता प्रतिशत में सबसे अधिक 4.32 है। जनगणना वर्ष 2001 एवं 2011 के मध्य केरल एक ऐसा राज्य रहा, जहाँ लिंगानुपात में परिवर्तन इकाई स्त्री साक्षरता के साथ अधिकतम 14.67 रहा। इसी अवधि में मिजोरम में सबसे श्रेष्ठ निष्पादन (16.52) देखने को मिला। आंकड़ों से स्पष्ट है कि उत्तर भारतीय राज्यों एवं दक्षिण भारतीय राज्यों में स्त्री साक्षरता और लिंगानुपात में बड़ा अन्तर है। दक्षिण भारतीय राज्यों का जनसांख्यिकीय निष्पादन उत्तर भारतीय राज्यों से बेहतर है।

सारणी क्रमांक –3 स्त्री साक्षरता परिवर्तन के साथ लिंगानुपात में परिवर्तन

राज्य	लिंगानुपात में परिवर्तन		
	1981-91	**1991-01**	**2001-11**
आन्ध्र प्रदेश	-0.4	0.34	1.61
अरूणाचल प्रदेश	-0.2	3.04	2.31
बिहार	-6.4	1.37	-0.15
दिल्ली	4.32	-0.78	7.58
गोवा	-0.7	-0.84	2.03
गुजरात	-0.8	-1.41	-0.15
हरियाणा	-0.4	-0.26	1.64
हिमाचल प्रदेश	0.21	-0.39	0.23
कर्नाटक	-0.3	0.32	0.8
केरल	0.38	14.67	6.2
मध्य प्रदेश	-0.9	0.38	1.13
महाराष्ट्र	-0.3	-0.81	0.83
मणिपुर	-1	1.6	1.08
मेघालय	0.13	1.35	0.99
मिजोरम	0.2	2.1	16.52
नागालैण्ड	1.61	3.39	1.46
ओडिशा	-1	0.06	0.51
पंजाब	0.29	-0.61	2.66
राजस्थान	-1.4	0.51	0.69
सिक्किम	2.22	-0.23	0.94
तमिलनाडु	-0.3	0.91	1.06
त्रिपुरा	-0.1	0.32	0.55
उत्तर प्रदेश	-0.7	1.3	0.82
पश्चिम बंगाल	-0.57	1.31	1.39
भारत	**-0.73**	**0.44**	**1.43**

संयुक्त राष्ट्र संघ के पूर्व महासचिव कोफी अन्नान का प्रसिद्ध कथन है कि ''साक्षरता निराशा से आशा की ओर अग्रसर होने में एक पुल का कार्य करती है।''

क्लार्क के एक अध्ययन के अनुसार भारत में पुत्र प्राथमिकता की प्रवृत्ति से दो प्रकार के परिणाम देखने को मिलते हैं– प्रथम, यह कि बड़े परिवारों की अपेक्षा छोटे परिवारों में पुत्रों का अनुपात ज्यादा है। दूसरा यह कि उत्तर भारत के सामाजिक आर्थिक रूप से पिछड़े परिवारों में भी पुत्रों का अनुपात अधिक है। डी0 राजनब्लूम के अध्ययन के अनुसार वो परिवार जिसमें पहली संतान पुत्र है तेजी से परिवार पूर्ण कर लेता है जबकि ऐसे परिवार जिसमें पहली संतान पुत्री है, परिवार वृद्धि में विराम तुलनात्मक रूप से देरी से लगाते हैं। परिवार के पुत्रोन्मुखी संतति व्यवहार के परिणामस्वरूप परिवार के सदस्यों की संख्या में वृद्धि ज्यादा समय तक होती है। डी0 एलमाण्ड (2000) के एक अध्ययन के अनुसार उत्तर प्रदेश, जो कि उत्तर भारत का वृहद जनसंख्या वाला प्रदेश है, में पुत्र प्राथमिकता की प्रवृत्ति गर्भ निरोध के साधनों के प्रयोग पर बड़ा प्रभाव डालती है, और उच्च उत्पादकता को प्रेरित करती है। यह प्रवृत्ति कुछ भौगोलिक हिस्सों तक ही सीमित नहीं है बल्कि भारतीय मूल

के वो लोग जो पश्चिमी देशों, अमेरिकी देशों में बस चुके हैं, शिक्षित और उच्च आय वर्ग में आते हैं, भी परम्परागत सोंच से मुक्त नहीं हो पाये हैं।

तकनीकी विकास के परिणामस्वरूप जीवन प्रत्याशा में भी बड़ा सकारात्मक परिवर्तन आया है। तकनीकी विकास ने बीमारियों की पहचान, बचाव एवं निदान ने बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। लेकिन इसी तकनीक का प्रयोग जब गलत ढंग से होने लगता है तो इसके निहित मूल उद्देश्य की प्राप्ति से ज्यादा दुष्परिणाम सामने आने लगते हैं। लिंग परीक्षण एवं भ्रूण हत्या जैसी घटनायें लिंगानुपात को असंतुलित करती हैं। के0 मदान (2014) के एक अध्ययन में स्पष्ट होता है कि जिन राज्यों में लिंग परीक्षण की सुविधायें ज्यादा आसानी से उपलब्ध हैं वहाँ जन्म के समय लिंगानुपात निम्न है। साथ ही ऐसे क्षेत्रों में कुपोषित स्त्री बालिकाओं की संख्या में भी कमी देखने को मिलती है एवं उन क्षेत्रों में जहाँ इस प्रकार की सुविधायें आसानी से प्राप्त नहीं हैं, प्रवृत्ति ठीक इसके विपरीत है।

विभिन्न राज्यों के लिंगानुपात एवं स्त्री साक्षरता के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि दोनों प्राचलों के सन्दर्भ में अन्र्तक्षेत्रीय विविधता है किन्तु उच्च स्त्री साक्षरता के साथ उच्च लिंगानुपात का साहचर्य है। उत्तर एवं दक्षिण भारतीय राज्यों में स्पष्ट जनसांख्किीय विभेदन है। दक्षिणी राज्यों में बेहतर स्त्री साक्षरता के साथ उच्च लिंगानुपात स्पष्ट देखने को मिलता है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण 1998–99 भी दक्षिण राज्यों में उच्च साक्षरता, श्रम कार्यों में संलिप्तता, छोटा पारिवारिक आकार, पुत्रोन्मुखी उत्पादकता की कमी जैसी विशेषताओं को स्वीकार करता है। उच्च स्त्री साक्षरता स्तर पारिवारिक निर्णय क्षमता एवं स्त्री रोजगार को भी प्रभावित करता है। उत्तर भारत के लगभग सभी राज्य निम्न लिंगानुपात प्रदर्शित करते हैं किन्तु कुछ राज्यों जैसे हिमाचल प्रदेश में प्रवत्ति के विपरीत लिंगानुपात में पर्याप्त सुधार आया है। दिल्ली का लिंगानुपात लिंग चयनात्मक प्रवास के कारण भी निम्न स्तर पर दिखायी देता है।

स्त्रियों तक मीडिया एवं अन्य संचार साधनों की पहुँच भी परम्परागत सोंच को बदलने में महती भूमिका निभाती है। आर0 लेन्सन एवं ई0 ओस्टर (2009) के त्रिवर्षीय अध्ययन इस बात की पुष्टि करता है कि स्त्री स्वायत्ता, घरेलू हिंसा में कमी, उत्पादकता में कमी, पुत्र प्राथमिकता प्रवृत्ति में कमी का साहचर्य टेलीविजन जैसे संचार साधनों की उपलब्धता के साथ है।

असंतुलित लिंगानुपात पुरूषों के विवाह अवसरों में कमी लाता है और ऐसी स्थिति में जनसंख्या में एक ऐसे युवा समूह का निर्माण होता है जो जीवन साथी एवं संतान से वंचित रहता है। ऐसे समूह में अशिक्षित एवं बेरोजगार युवकों की संख्या अधिक होती है। ज्यादातर ऐसे युवा अपराधिक कार्यों में संलिप्त होकर समाज के लिए खतरा बन जाते हैं। 70 देशों से प्राप्त इण्टरपोल के आंकड़ों के विश्लेषण से यह तथ्य सामने आया है कि असंतुलित लिंगानुपात वाले समाज में हिंसा, हत्या और बलात्कार जैसी घटनायें ज्यादा होती हैं। एक अन्य अध्ययन भी इस बात की पुष्टि करता है कि ज्यादातर अपराध निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले समाज के अविवाहित युवक करते हैं। एफ0लिम, एम0एच0 बान्ड (2005) ने अपने अध्ययन में पाया कि आर्थिक असमानता, नकारात्मक प्रति व्यक्ति आय वृद्धि दर, निम्न लिंगानुपात एवं हिंसक अपराध की दर के बीच सम्बन्ध को रैखिक समीकरण विश्लेषण द्वारा समझा जा सकता है।

लिंगानुपात में सुधार हेतु विभिन्न उपाय, कानून आदि का सहारा लिया जा रहा है, जिसमें कुछ मात्रा में सफलता भी प्राप्त हुयी है। विभिन्न उपायों के अन्तर्गत कन्या शिक्षा धन में सब्सिडी, स्वास्थ्य देखभाल, विवाह हेतु धन की मदद और भ्रूण परीक्षण के लिए दण्डात्मक प्रावधान आदि सम्मिलित हैं। 1990 के दशक के उत्तरार्द्ध में लगभग एक लाख लिंग चयनात्मक गर्भपात हुए जिसमें ज्यादातर गर्भपात गुजरात, हरियाणा, पंजाब आदि राज्यों में हुए। सख्त कानूनों का क्रियान्वयन इस दिशा में लाभकारी सिद्ध हो सकता है। कोरिया जैसे देश में कानून लागू होने के एक वर्ष की अवधि में ही लिंगानुपात में पर्याप्त परिवर्तन देखने को मिला, इस कानून में गर्भपात की प्रक्रिया में संलिप्त डॉक्टर का लाइसेंस निरस्तीकरण जैसे कठोर कदम शामिल हैं। कोरिया में ऐसे कानून के परिणामस्वरूप लिंगानुपात 117 से बढ़कर 113 हो गया।

इस प्रकार उपरोक्त तथ्य एवं विभिन्न अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं कि स्त्री साक्षरता एवं लिंगानुपात में धनात्मक साहचर्य है। असंतुलित लिंगानुपात समाज एवं देश को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। समाज की सामाजिक–आर्थिक उन्नति एवं अपराधिक प्रवृत्ति लिंगानुपात द्वारा प्रभावित होती है। इसलिए सरकार को प्रभावी कानूनों एवं स्त्री साक्षरता को बढ़ावा देने वाली नीतियों के द्वारा सार्थक प्रयास करने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. Pande RP, Astone NM. Explaining son preference in rural India: the independent role of structural versus individual factors. Popul Res Policy Rev 2007;26:1-29.
2. Jayaraj D, Subramanian S. The wellbeing implications of a change in the sex-ratio of a population. Soc Choice Welfare 2009;33:129-50.
3. Clark S. Son preference and sex composition of children: Evidence from India. Demography 2000;37:95-108.
4. Almond D, Edlund L. Son-biased sex ratios in the 2000 United States Census. Proc Natl Acad Sci U S A 2008;105:5681-2
5. Madan K, Breuning MH. Impact of prenatal technologies on the sex ratio in India: an overview. Genet Med 2014;16(6):425-32.
6. Jensen R, Oster E. The Power of TV: Cable Television and Women's Status in India. The Q J Econ 2009;124:1057-94
7. Lim F, Bond MH, Bond MK. Linking Societal and Psychological Factors to Homicide Rates across Nations. J Cross-Cult Psychol 2005;36:515-36.
8. Arnold F, Kishor S, Roy TK. Sex-Selective Abortions in India. Popul Dev Rev 2002;28:759-85.

अमित सचान

असि. प्रोफेसर, भूगोल विभाग, पं.सुन्दरलाल मेमोरियल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कन्नौज (उ.प्र.)